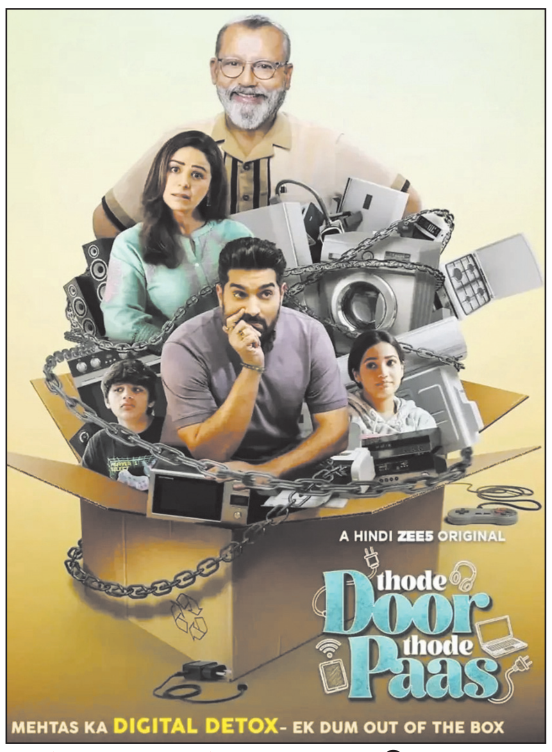

थोड़े दूर थोड़े पास की विशेष स्क्रीनिंग में पहुंचे सिद्धार्थ

वेब सीरीज़ थोड़े दूर थोड़े पास की कास्ट और क्रू के लिए एक विशेष स्क्रीनिंग का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में उत्साह से भरी शानदार मौजूदगी देखने को मिली, जिसमें मोना सिंह, कुनाल रॉय कपूर, अमोल पराशर, आहना कुमरा, मंजोत सिंह, मिहिर आहूजा और कई अन्य शामिल थे.

इस रात में एक खास रंग तब जुड़ गया जब आदित्य रॉय कपूर और सिद्धार्थ रॉय कपूर अपने भाई कुनाल का हौसला बढ़ाने के लिए पहुंचे, जिससे यह पल एक खूबसूरत पारिवारिक जश्न में तब्दील हो गया. हास्य और संवेदना के सुंदर मिश्रण के साथ यह सीरीज़ दिखाती है कि जब एक आधुनिक परिवार को अपने डिजिटल उपकरणों से दूर रहना पड़ता है, तो वे फिर से इंसानी रिश्तों और सच्चे जुड़ाव की खुशी को किस तरह से महसूस करते हैं.

एक गर्मजोशी भरे और यादों से भरी पृष्ठभूमि पर आधारित, यह सीरीज़ दर्शकों को उस दौर में ले जाती है जब बातचीत दिल से होती थी, सत्र एक गुण माना जाता था, और परिवार के साथ वक्त बिताने के लिए वाई-फाई की ज़रूरत नहीं होती थी. अपनी मज़ेदार और भावनात्मक कहानी कहने की शैली के साथ थोड़े दूर थोड़े पास हमें समय पर यह याद दिलाती है कि कभी-कभी स्क्रीन से थोड़ी दूरी हमें पहले से कहीं ज़्यादा करीब ला सकती है.

गुलाम हैदर ने पहचाना था लता की प्रतिभा को

महान पार्श्वगायिका लता मंगेशकर के सिने कैरियर के शुरूआती दौर में कई निर्माता-निर्देशक और संगीतकारों ने पतली आवाज के कारण उन्हें गाने का अवसर नहीं दिया, लेकिन उस समय एक संगीतकार ऐसे भी थे जिन्हें लता मंगेशकर की प्रतिभा पर पूरा भरोसा था और उन्होंने उसी समय भविष्यवाणी कर दी थी ..यह लड़की आगे चलकर इतना अधिक नाम करेगी कि बड़े से बड़े निर्माता-निर्देशक और संगीतकार उसे अपनी फिल्म में गाने का मौका देंगे. यह संगीतकार और कोई नहीं.. गुलाम हैदर थे .

वर्ष 1908 में जन्मे गुलाम हैदर ने स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद दंत चिकित्सा की पढ़ाई शुरू की थी. इस दौरान अचानक उनका रूझान संगीत की ओर हुआ और उन्होंने बाबू गणेश लाल से संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी. दंत चिकित्सा की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह दंत चिकित्सक के रूप में काम करने लगे. पांच वर्ष तक दंत चिकित्सक के रूप में काम करने के बाद गुलाम हैदर का मन इस काम से उचट गया. उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि संगीत के क्षेत्र में उनका भविष्य अधिक सुरक्षित होगा. इसके बाद वह कलकत्ता की एलेक्जेंडर थियेटर कंपनी में हारमोनियम वादक के रूप में काम करने लगे.

वर्ष 1932 में गुलाम हैदर की मुलाकात निर्माता-निर्देशक ए आर कारदार से हुयी जो उनकी संगीत प्रतिभा से काफी प्रभावित हुये. कारदार उन दिनों अपनी नयी फिल्म 'स्वर्ग की सीढी' के लिये संगीतकार की तलाश कर रहे थे. उन्होंने हैदर से अपनी फिल्म में संगीत देने की पेशकश की लेकिन अच्छा संगीत देने के बावजूद फिल्म बॉक्स आफिस पर असफल रही. इस बीच हैदर को डी एम पंचोली की वर्ष 1939 में प्रदर्शित पंजाबी फिल्म 'गुल.ए.बकावली' में संगीत देने का मौका मिला. फिल्म में नूरजहां की आवाज में गुलाम हैदर का संगीतबद्ध गीत ..पिंजरे दे विच कैद जवानी.. उन दिनों सबकी जुबान पर था.

वर्ष 1941 में हैदर के सिने कैरियर का अहम वर्ष साबित हुआ. फिल्म 'खजांची' में उनके संगीतबद्ध गीतों ने भारतीय फिल्म संगीत की दुनिया में एक नये युग की शुरआत कर दी. वर्ष 1930 से 1940 के बीच संगीत निर्देशक शास्त्रीय राग-रागिनियों पर आधारित संगीत दिया करते थे लेकिन हैदर इस विचारधारा के पक्ष में नहीं थे. हैदर ने शास्त्रीय संगीत में पंजाबी धुनों कामिश्रण करके एक अलग तरह का संगीत देने का प्रयास दिया और उनका यह प्रयास काफी सफल भी रहा.

अन्विता का किरदार निभाना ताज़गी भरा अनुभव : सुम्बुल

सोनी सब का चर्चित शो 'इत्ती सी खुशी' अपनी नायिका अन्विता (सुम्बुल तौकीर खान) के माध्यम से एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहा है .एक ऐसी महिला की कहानी जो परंपराओं को चुनौती देने का साहस रखती है. जहां आमतौर पर टीवी की नायिकाएं अपने प्रियजनों के लिए हर कष्ट सहने और त्याग करने में ही महानता समझती हैं, वहीं अन्विता दर्दनाक परिस्थिति में खड़े होकर खुद के लिए खड़े होने का साहस दिखाती है.

पारंपरिक नायिकाओं से अलग, जो अपनों को बचाने के लिए किसी भी हद तक चली जाती हैं, अन्विता तब भी अपने अस्तित्व को प्राथमिकता देती है जब मामला उसके खुद के परिवार का हो. उसका निर्णय स्वार्थ से नहीं, बल्कि अपने छोटे भाई-बहनों की भलाई के लिए अपनी सेहत और स्थिरता को बनाए रखने की सोच से प्रेरित है.जब उसके पिता सुहास (वरुण बडोला) को लिवर सिरोसिस का पता चलता है और उन्हें तुरंत ट्रांसप्लांट की ज़रूरत होती है, तब अन्विता को पता चलता है कि उसका लिवर मैच करता है. लेकिन तुरंत फैसला लेने के बजाय, वह ठहरकर अपने

परिवार के भविष्य के बारे में सोचती है, खासकर अपने छोटे भाई-बहनों के बारे में, जो पूरी तरह उस पर निर्भर हैं.अपना लिवर दान न करने का उसका फैसला स्वार्थी नहीं, बल्कि गहरी समझ और दूरदृष्टि का प्रतीक है. अन्विता पल भर की भावना में नहीं, बल्कि पूरे परिवार के लंबे भविष्य को ध्यान में रखकर निर्णय लेती है. वह समझती है कि उसकी सेहत और मौजूदगी उसके परिवार की स्थिरता के लिए कितनी ज़रूरी है. हर परिणाम को सोच-समझकर तौलने का उसका तरीका आज की आधुनिक और यथार्थवादी प्रेम और जिम्मेदारी की समझ को दर्शाता है.

अपने भाई-बहनों की सुरक्षा चुनकर, और एक जीवन की बजाय कई जीवनों को संतुलन में रखकर अन्विता एक नई तरह की सशक्त नायिका बनकर उभरती है. उसकी कहानी दर्शकों के लिए न सिर्फ भावनात्मक बल्कि विचारोत्तेजक भी है , जो यह सवाल उठाती है कि क्या प्रेम का अर्थ हमेशा त्याग ही होता है? आने वाले ट्रैक के बारे में बात करते हुए सुम्बुल ने कहा, ऐसा किरदार निभाना बहुत ताज़गीभरा अनुभव है, जो अपनी नायकता को आत्मसमर्पण में नहीं बल्कि अपने विश्वास पर अडिग रहने में परिभाषित करती है. अन्विता की यात्रा साहस और करुणा की है. वह अपने पिता और भाई-बहनों से बेहद प्यार करती है.

भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव-2025 में सम्मानित होंगे रजनीकांत

भारतीय सिनेमा में 50 वर्षों के उल्लेखनीय सफ़र के लिए सुपरस्टार रजनीकांत को गोवा में 56वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आईएफएफआई) के समापन समारोह में सम्मानित किया जाएगा. यह महोत्सव 20 से 28 नवंबर तक आयोजित होगा, जिसमें दुनिया भर की विविध फिल्मों और सिनेमाई प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया जाएगा.

इस वर्ष के फिल्म महोत्सव में 81 देशों की 240 से अधिक फिल्में प्रदर्शित होंगी, जिनमें 13 विश्व प्रीमियर, चार अंतर्राष्ट्रीय प्रीमियर और 46 एशियाई प्रीमियर शामिल हैं. आयोजकों ने बताया कि आईएफएफआई-2025 को 127 देशों से रिकॉर्ड 2,314 फिल्में प्राप्त हुईं, जो इसकी बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाती है. सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सभी को प्रतिनिधित्व देने और नयी पहलों के प्रति महोत्सव के दृढ़ संकल्प को जाहिर किया. श्री वैष्णव ने एक प्रेस नोट में कहा, आईएफएफआई-2025 एक महत्वपूर्ण अध्याय है क्योंकि यह समावेशिता और विविधता के साथ दुनिया के सभी कोनों से आवाज़ों को प्रदर्शित करता है और साथ ही भारतीय क्षेत्रीय सिनेमा की समृद्ध कला को उजागर करता है. उभरते फिल्म निर्माताओं और डिजिटल कहानी कहने पर केंद्रित कार्यक्रमों की शुरुआत करके आईएफएफआई ऐसे मंचों को पोषित कर रहा है जो नई प्रतिभाओं को आगे बढ़ाते हैं और डिजिटल युग में फिल्म निर्माण के विकास का जश्न मनाते हैं.

इस महोत्सव की उद्घाटन फिल्म द ब्लू ट्रेल होगी, जो ब्राज़ीलियाई फिल्म निर्माता गेब्रियल मस्कारो द्वारा निर्देशित एक विज्ञान-फाई फंतासी है, जिसने इससे पहले बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 2025 में सिल्वर बियर ग्रैंड जूरी पुरस्कार जीता था. यह फिल्म अमेज़न वर्षावन में एक 75 वर्षीय महिला की यात्रा पर आधारित है.

इस वर्ष जापान को फोकस देश के रूप में चुना गया है, जहां जापानी सिनेमा का एक क्यूरेटेड प्रदर्शन होगा.

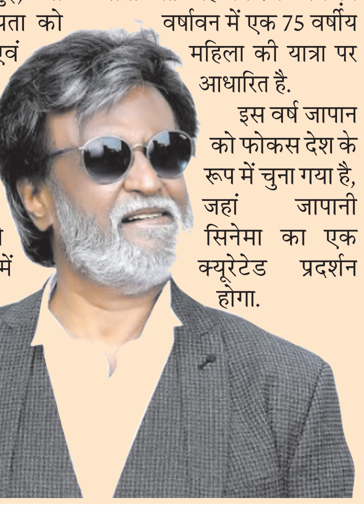

शेखर एआई की मदद से दोबारा बनाएंगे फिल्म पानी

करीब एक दशक बाद चर्चित फिल्म निर्देशक शेखर कपूर अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म पानी को फिर से जीवंत करने की तैयारी में हैं, लेकिन इस बार कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की मदद से बनाया जायेगा.

गौरतलब है कि यह वही फिल्म है जिसमें दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत को मुख्य भूमिका के लिए चुना गया था, लेकिन निर्माता यशराज फिल्म्स के हटने के बाद यह फिल्म ठंडे बस्ते में चली गई थी.

शेखर कपूर ने यूनीवार्ता से बातचीत में बताया कि अब वह फिल्म पानी को एआई तकनीक के जरिए दोबारा बनाने की योजना पर काम कर रहे हैं. उनके अनुसार, कई लोगों ने कहा था कि यह फिल्म बहुत महंगी है. लेकिन अब मैं इसे एआई से बनाने जा रहा हूं, जो तेज़ और किफायती, दोनों है. इस बार फिल्म ज़रूर शुरू होगी.

उन्होंने यह भी बताया कि फिल्म की मूल कलाकार एआई मॉडल के अनुसार बदले जा सकते हैं.

निर्देशक ने अपनी दूसरी आगामी फिल्म मासूम 2 के बारे में भी जानकारी दी. यह 1983 में आयी उनकी ही फिल्म मासूम का सीक्वल है. इसमें नसीरुद्दीन शाह और शबाना आज़मी की वापसी होगी, साथ ही मनोज बाजपेयी और कुछ नए चेहरे भी शामिल होंगे. कपूर ने बताया कि उन्होंने स्क्रिप्ट को अंतिम रूप देने में दो साल लगाए हैं और फिल्म की शूटिंग दिसंबर या जनवरी में शुरू होने की संभावना है.

फिल्म साली मोहब्बत में नज़र आएंगे दिव्येंदु शर्मा

कई फिल्म फेस्टिवल्स में शानदार प्रदर्शन के बाद जी-5 की ऑरिजिनल फिल्म - साली मोहब्बत इस साल के अंत में सिर्फ जी 5 पर रिलीज़ के लिए तैयार है. टिस्का चोपड़ा के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म का दर्शकों को बेसब्री से इंतज़ार है, जिसमें राधिका आप्टे, दिव्येंदु शर्मा, अनुराग कश्यप, अंशुमान पुष्कर, सौरसेनी मैत्रा और शरत सक्सेना ने मुख्य किरदार निभाए हैं.

जियो स्टूडियोज़ और मनीष मल्होत्रा के स्टेज 5 प्रोडक्शन द्वारा प्रोड्यूस की गई ये थ्रिलर-ड्रामा बेहद मशहूर डिज़ाइनर की पहली डिजिटल फिल्म है, जो विजुअल्स की उनकी बारीकियों और जज्बातों से भरी एक शानदार कहानी का बेहद खूबसूरत मेल है. जियो स्टूडियोज़ और जी 5चौथी बार साथ मिलकर काम कर रहे हैं. इससे पहले दोनों ने आर. माधवन की %हिसाब बराबर%, सान्या मल्होत्रा की %मिसेज़% और हाल ही में अरशद वारसी और जितेंद्र कुमार की भागवत जैसी सफल फिल्में दी हैं. राधिका आप्टे भी इस फ़िल्म के ज़रिये इस प्लेटफ़ॉर्म पर वापसी कर रही हैं, जिन्होंने %मिसेज़ अंडरकवर% में अपने शानदार प्रदर्शन से दर्शकों का दिल जीता था.

पिछले साल IFFI और इस साल शिकागो साउथ एशियन फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शित होने वाली फिल्म, साली मोहब्बत दर्शकों को एक ऐसी दुनिया में ले जाती है जहाँ प्यार जुनून में बदल जाता है और छिपे हुए राज़ धीरे-धीरे सामने आते हैं.

यंग इंडिया

यूपी में होगी 45 हजार होमगार्ड की बंपर भर्ती

यूपी में बंपर भर्तियां निकलने वाली है. प्रदेश में 45 हजार से अधिक होमगार्ड स्वयंसेवकों की वैकेंसी का रास्ता साफ हो गया है. इनकी भर्ती की तर्ज पर होगी. शासन ने इसके लिए होमगार्ड एनरोलमेंट मार्गदर्शिका जारी कर दी है. युवाओं के लिए सरकारी नौकरी करने का सुनहरा मौका है. जल्दी ही इसके लिए आवेदन की प्रक्रिया शुरू होने वाली है. होमगार्ड स्वयंसेवकों के लिए रजिस्ट्रेशन उनके जिलें में होने वाली खाली पदों के अनुसार वैकेंसी को जारी किया जाएगा.

कब से शुरू होगी रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया

जानकारी के मुताबिक रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया अगले साल से 1 जुलाई से शुरू हो सकती है. पुरुष और महिलाओं के लिए कितनी सीटों पर भर्तियां होगी इसकी जानकारी दी जाएगी.आरक्षण की गणना उपलब्ध रिक्तियों के अनुरूप होगी.

आवेदन जिस जिले का मूल निवासी होगा, वह उसे जिले के लिए आवेदन करना होगा. सार्वजनिक, शासकीय व अर्ध शासकीय और सरकारी उपक्रम की सेवाओं में नियमित रूप से कार्यरत व्यक्ति होमगार्ड के पद पर आवेदन करने के पात्र नहीं होंगे. किसी निगम से हटाए गए कर्मचारी भी आवेदन के पात्र नहीं होंगे.

किसी व्यक्ति के खिलाफ कोर्ट में कोई आपराधिक मामला चल रहा हो तो वो भी रजिस्ट्रेशन के पात्र नहीं होंगे. होमगार्ड के लिए उम्मीदवारों को 10वीं पास होना होगा.अपने सभी डॉक्यूमेंट्स तैयार करके रख लें.

घर बैठे फ्री में करें राइटिंग से जुड़े ये 3 कोर्स

शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित फ्री ऑनलाइन एजुकेशन पोर्टल स्वयं पर अनेक पाठ्यक्रम उपलब्ध है. जिसका संचालन अलग-अलग नेशनल कॉर्डिनेटर द्वारा किया जाता है. सीईसी के अंतर्गत वर्तमान में कई प्रसिद्ध कॉलेज राइटिंग से संबंधित तीन अलग-अलग पाठ्यक्रम ऑफर कर रहे हैं, जिन्हें निर्धारित समय सीमा के भीतर ज्वाइन किया जा सकता है.

कोर्स के बारे में जानें

अकादेमिक राइटिंग- इस पाठ्यक्रम से अब तक 400 से अधिक लर्नर्स जुड़ चुके हैं. यह कोर्स एचएनबी गढ़वाल यूनिवर्सिटी, श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखंड द्वारा ऑफर किया जा रहा है. यह एक यूजी/पीजी लेवल का प्रोग्राम है. जिसका संचालन 14 जनवरी से लेकर 30 अप्रैल 2026 के बीच किया जाएगा. इसे केवल 15 सप्ताह में पूरा किया जा सकता है. पीजी स्टूडेंट्स, रिसर्च स्कॉलर्स, साइंटिस्ट और फैकल्टी मेंबर्स के लिए यह एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है.

इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश- यह कोर्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी रुड़की के प्रोफेसर विनोद मिश्रा द्वारा ऑफर किया जा रहा है. इन अंडरग्रेजुएट लेवल के प्रोग्राम का संचालन 12 जनवरी से लेकर 30 अप्रैल 2026 तक होगा. इसे पूरा करने के लिए केवल 15 सप्ताह का समय लगता है.

इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश-1- यह कोर्स यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर जी. स्वर्ण लक्ष्मी द्वारा ऑफर किया जा रहा है. अब तक 35 लर्नर्स इससे जुड़ चुके हैं. पाठ्यक्रम की शुरुआत 12 जनवरी से होगी. वहीं इसका समापन 30 अप्रैल 2026 को होगा.

नौकरी या करियर से संबंधित बढ़िया सलाह आपके जीवन में काफी हद तक बदलाव ला सकती है. यह आपको पूरी तरह से नए रास्ते पर ले जा सकती है, आपको कोई नई भूमिका दिला सकती है या फिर आपको कोई बड़ा बदलाव करने के लिए प्रेरित कर सकती है. हालांकि, ऐसे लोगों की सलाह अधिक मायने रखती है, जिन्होंने अपने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखने के बावजूद खुद को काबिल बनाया हो. ऐसे में, यदि आप भी अपने करियर से जुड़ी किसी समस्या में उलझे हुए हैं, तो कुछ सुझाव हैं, जिनकी मदद से आपको अच्छी सलाह की पहचान करके सही दिशा में आगे बढ़ने में मदद मिल सकती है.

अच्छी सलाह की पहचान करके सही दिशा में आगे बढ़ें

सही इंसान को पहचानें- दूसरे आपके बारे में क्या सोचते हैं, इसकी परवाह करने के बजाय उन लोगों की प्रतिक्रिया को गंभीरता से लें, जो बुद्धिमान व अनुभवी हैं और वास्तव में आपकी मदद करना चाहते हैं. इसलिए किसी इन्सान के फीडबैक पर तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय, उसके बारे में सोचने के लिए थोड़ा समय लें. खुद से पूछें कि क्या वह व्यक्ति आपके हित में सोचता है? क्या उसे उस विषय में अनुभव है, जिस पर उसने आपको सलाह दी है? अगर किसी भी सवाल का जवाब नहीं है, तो आपको सलाह को गंभीरता से लेने के बारे में फिर से सोचना चाहिए.

मेडिकल क्षेत्र में हजारों पदों पर होगी भर्ती

राज्य के युवाओं के लिए सरकारी नौकरी पाने का सुनहरा मौका सामने आ गया है. छत्तीसगढ़ सरकार ने चिकित्सा क्षेत्र को मजबूत बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है. राज्य में कुल 1009 नए पदों की भर्ती पर मुहर लग चुकी है. यह पद मुख्य रूप से नए मेडिकल कॉलेजों, नर्सिंग कॉलेजों और फिजियोथैरेपी संस्थानों में रिक्त पदों को भरने के लिए स्वीकृत किए गए हैं.

चिकित्सा शिक्षा और सेवा में होगा सुधार- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि प्रदेश के विभिन्न जिलों में मेडिकल, नर्सिंग और फिजियोथेरेपी संस्थानों में सभी संसाधन उपलब्ध हैं. नए पद युवाओं के लिए रोजगार का अवसर देंगे. साथ ही सभी जिलों में मेडिकल सेवा और भी बेहतर होगी. ये निर्णय स्वास्थ्य क्षेत्र में नई ऊर्जा और विशेषज्ञता लाएगा. प्रदेश में चिकित्सा शिक्षा और सेवा दोनों के स्तर में सुधार होगा.

- मेडिकल कॉलेज रायगढ़ - 39 पद
- डीकेएस सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल रायपुर - 1 पद
- मेडिकल कॉलेज बिलासपुर - 20 पद
- फिजियोथेरेपी कॉलेज जगदलपुर, जशपुर, मनेंद्रगढ़ - 108 पद (प्रत्येक में 36)
- नए फिजियोथेरेपी कॉलेज (मनेंद्रगढ़, जशपुर, रायगढ़, बिलासपुर, दुर्ग, जगदलपुर) - 216 पद
- नए मेडिकल कॉलेज (दंतेवाड़ा, मनेंद्रगढ़, कुनकुरी-जशपुर) - 180 पद (प्रत्येक में 60)
- नए मेडिकल कॉलेज (जांजगीर-चांपा, कबीरधाम) - 120 पद (प्रत्येक में 60)
- सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल बिलासपुर - 55 पद
- मेडिकल कॉलेज अंबिकापुर (रेडियोथेरपी विभाग) - 7 पद
- नर्सिंग कॉलेज (दंतेवाड़ा, बैकुंठपुर, बीजापुर, बलरामपुर, जशपुर) - 210 पद